International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 5; September 2017; Page No. 06-08

एक शिक्षक की प्रेरणा, उत्प्रेरक के रूप में चुनौतियाँ एवं समाधान

डॉ0 राहुल उठवाल
प्रशिक्षक, राष्ट्रीय एकता संस्थान (आई.एन.आई.), कॉलेज ऑफ मिलिट्री इंजीनियरिंग (सी.एम.ई.), कैम्पस, दापोड़ी, महाराष्ट्र, भारत।

प्रस्तावना

भारतीय समाज में शिक्षण कार्य को पवित्रतम कार्य माना जाता है क्योंकि ज्ञान दान के समान दूसरा कोई भी परोपकार निर्दिष्ट नहीं है। शिक्षण में शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों ही समान रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। शिक्षक एक नियन्त्रणकर्ता तथा एक आदर्श व्यक्ति का निर्वहन करता है । ''शिक्षक कभी भी आदेशक के जैसा व्यवहार नही करता। वह एक मार्गदर्शक, प्रेरक, आदर्श अभिभावक होता है। वह अपने विद्यार्थी में यह भावना उत्पन्न करता है कि उसका कार्य महत्त्वपूर्ण है, उसके सीखने की प्रक्रिया से ही पूर्णता प्राप्त होती है। एक शिक्षक को आदर्श व्यक्ति की भूमिका में स्वयं को संतुलित मानव बनाने का प्रयास करना चाहिए।''[1]

''शिक्षक की बनाई मूर्ति न तो पत्थर की होगी न टेरेकोटा की, न सिरेमिक्स की, न लकड़ी आदि की, उसकी मूर्ति तो जीवन की मूर्ति होगी, ठीक जीवन की तरह गतिशील, भावनामय, सम्भावनाओं से जुड़ी, काम यानी कर्म और कामना से युक्त, तब जाकर वह कह सकेगा कि उसने ज्ञान को आनन्द एवं प्रेम में बदला है, कर्म और श्रम को श्रम और संघर्ष में बदला है, उपलब्धि को सुख और संतोष में बदला है।''[2] (रमेश दुबे)

शिक्षक एक ऐसा अस्त्र और शस्त्र है, जिसके द्वारा व्यक्ति जीवन में विजय और सफलता के सोपानों को प्राप्त कर सका है । शिक्षक ही वह महत्त्वपूर्ण व्यक्ति है जो विद्यार्थियों को निर्देशित एवं शिक्षित करके एक अच्छे समाज का निर्माण करता है। आचार्य चाणक्य एक महान शिक्षक थे जिन्होंने भारतवर्ष की विजय पताका को विश्वभर में फहराने के लिए एक योग्य शासक का निर्माण किया था। शिक्षक ज्ञान, समृद्धि और प्रकाश का एक पुंज होता है। वह चाहता है कि उसका प्रत्येक विद्यार्थी एक स्वतंत्र व्यक्तित्व बने। इस संदर्भ में जॉन एडम्स ने कहा था कि ''शिक्षक ही व्यक्ति, समाज, राष्ट्र एवं विश्व का निर्माणक एवं विकास का प्रमुख आधार है। बिना शिक्षक की सक्रिय सहभागिता के किसी राष्ट्र का वर्तमान एवं भविष्य निर्माण एवं विकास सम्भव नहीं है।'' इसी बात को भारतीय मनीषियों ने ''गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो, महेश्वरः गुरुर्साक्षात् परब्रह्म'' के रूप में प्रतिपादित किया है। यह परम्परा एवं सम्मान शिक्षक के प्रति सदा से चला आ रहा है इसलिए योग्य शिक्षक समाज हित के लिए अति आवश्यक है।

वर्तमान में शिक्षक

ज्ञान एवं विद्या वह दीपक है जो मनुष्य को अंधकार रूपी संकट में प्रकाश रूपी सहारा देता है। आज बड़े दुर्भाग्य से कहना पड़ता है कि विद्या एक व्यापार का बड़ा केन्द्र बन चुकी है। विद्यालय एक केन्द्र की इमारत की तरह हो गई है और अध्यापक एक व्यापारी के समान बनते जा रहे हैं। आज एक बालक को विद्यालय में प्रवेश दिलाने के लिए माता–पिता को समस्याओं का सामना करना पड़ता है, और यदि विद्यालय प्रसिद्ध है तब तो माता–पिता को विद्यालय के अनेक चक्कर काटने पड़ जाते हैं। आज बालक विद्यालय में पढ़ते तो हैं किन्तु उनकी पढ़ाई पूरी नहीं हो पाती क्योंकि वहां के शिक्षक–शिक्षिकाओं को व्यापारी बना कर रख दिया है। शिक्षक विद्यालय–महाविद्यालय में किसी विषय की पूर्ण जानकारी विद्यार्थियों को न देकर कहते हैं कि आप ट्यूशन आ जाना वहीं पर सब परेशानी का हल कर देंगे। वर्तमान में यह क्या होता जा रहा है । हमारी सभ्यता में यह कैसी विकृति आ गई है, हम कहाँ थे और कहाँ आ गये हैं ?

कक्षा का सामाजिक वातावरण

सामान्यतः सामाजिक वातावरण का तात्पर्य किसी समाज अथवा उसके अंग से है जिसका प्रभाव उसके सदस्यों की मनोवृत्तियों तथा क्रियाओं पर पड़ता है। इस अर्थ में कक्षा के सामाजिक वातावरण का तात्पर्य उन सभी पक्षों से है जिनका प्रभाव शिक्षक तथा छात्रों के बीच संम्बन्धों तथा उनकी कार्य कुशलताओं पर पड़ता है। कक्षा के सामाजिक वातावरण की एक महत्त्वपूर्ण विधा शिक्षक तथा छात्र के बीच का सम्बन्ध है। यह सम्बन्ध जितना अधिक सफल होता है, कक्षा के सामाजिक वातावरण को उतना ही उन्नत माना जाता है। साथ ही इसका स्वस्थ एवं सकारात्मक प्रभाव छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।

कक्षा में समूह सम्बन्ध के सुधार की विधियाँ

कक्षा में समूह तथा समूह गत्यात्मकता के अध्ययन की आवश्यकता है। हम यह भी देख चुके है कि कक्षा या वर्ग भी एक सामाजिक समूह है अतः शिक्षा एवं अध्यापन की सफलता समूह सम्बन्धों पर आधारित है। अब प्रश्न यह उठता है कि कक्षा में समूह सम्बन्ध को कैसे बेहतर बनाया जाए ताकि अध्यापन कार्य समूचित रूप से सम्भव हो सके और विद्यार्थी उस अध्यापन से लाभान्वित हो सके।

शिक्षक द्वारा प्रेरणा कि विधियाँ

मरसेल ने लिखा है–''प्रेरणा यह निश्चय करती है कि लोग कितनी अच्छी तरह से सीख सकते हैं और कितनी देर तक सीखते रहते हैं''। सीखने के कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरणा प्रदान करना आवश्यक है। प्रेरणा प्रदान करने की निम्नलिखित विधियाँ हैं –

- **रूचि** – विद्यार्थियों के भीतर पाठ के प्रति रूचि उत्पन्न करनी चाहिए।
- **सफलता** – अध्यापक को सदैव यह प्रयास करना चाहिए कि विद्यार्थियों को सीखने वाले कार्य में सफलता प्राप्त हो। फ्रेन्डसन का कथन है–''सीखने के सफल अनुभव अधिक सीखने की प्रेरणा देते हैं।''

- **प्रतिद्वन्द्विता** – विद्यार्थियों में प्रतिद्वन्द्विता की भावना का विकास करना चाहिए एवं विद्यार्थियों में स्वस्थ प्रतिस्पर्द्धा के लिए प्रयास करना चाहिए।
- **सामूहिक कार्य** – विद्यार्थियों को सामूहिक रूप से कार्यों में भाग लेने के अवसर प्रदान करने से भी उन्हें प्रेरणा प्राप्त होती है। कक्षा शिक्षण खेल आदि इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।
- **प्रशंसा** – शिक्षक को अच्छे कार्यों के लिए विद्यार्थियों की प्रशंसा करनी चाहिए। प्रशंसा भी एक कारक है। फ्रैन्डसन के शब्दों में–''उचित समय और स्थान पर प्रयोग किये जाने पर प्रशंसा प्रेरणा का एक महत्त्वपूर्ण कारक है।''[3]

''सीखने की प्रक्रिया में प्रेरणा का महत्त्वपूर्ण स्थान है अतः प्रेरणाहीन क्रिया के सीखने में व्यक्ति रूचि नहीं लेता। जो निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है –

- रूचि का विकास
- बाल व्यवहार में परिवर्तन
- मानसिक विकास में सहायक
- लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक
- अनुशासन स्थापित करने में सहायक
- चरित्र निर्माण में सहायक
- सामाजिक गुणों का विकास''[4]

सीखने में प्रेरणा का स्थान तथा महत्त्व बालकों के व्यवहार का निरीक्षण करने से पता चलता है कि उनका समस्त व्यवहार प्रेरणा पर ही आधारित रहता है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सुचारू पूर्वक चलाने के लिए विद्यार्थियों को ज्ञानार्जन के लिए प्रेरित करना आवश्यक है। प्रेरणा प्राप्त कर विद्यार्थी पढ़ाई में रूचि लेने लगते हैं। जिससे ज्ञानार्जन की गति भी तीव्र हो जाती है। इसी संदर्भ में थॉमसन ने लिखा है–''प्रेरणा छात्र में रूचि उत्पन्न करने की कला है।''

एन्डरसन प्रेरणा के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि–''सीखना प्रेरणा पाकर ही सर्वोत्तम ढ़ंग से आगे बढ़ती है।''

क्लासमियर एवं गुडविन कहते हैं कि–''सीखने के लिए प्रेरणा का महत्त्व निःसंदेह रूप से साधारणतः स्वीकार किया जाता है।''

क्रौ एवं क्रौ ने लिखा है–''प्रेरणा छात्र को अपने सीखने की क्रियाओं में प्रोत्साहन प्रदान करती है।''

प्रेरणा की क्या आवश्यकता है ?

प्रेरणा शिक्षकों के लिए शिक्षण कार्य को सरल बनाने के लिए एक मजबूत घटक है। यदि प्रेरणा मजबूत एवं शक्तिशाली है तो शिक्षण के समस्त कार्य सरल एवं आरामदायक हो जाते हैं। विद्यार्थी प्रेरणा के द्वारा ही विषय का अच्छी प्रकार से अध्ययन, मनन एवं चिन्तन करते हैं। हम यह देखते है कि कुछ विद्यार्थी किसी विशेष अध्यापक से विशेष प्रेम एवं उनका सम्मान करते हैं। इसका अर्थ यह है कि उस शिक्षक के प्रेरणा देने का तरीका बहुत अच्छा है, विद्यार्थी उसके द्वारा किये जा रहे अध्यापन कार्य को बहुत रोचकता के साथ अध्ययन करते हैं।

इसलिए हम समझ सकते है कि प्रेरणा की भूमिका अध्यापक के कार्य में बहुत अधिक है। एक शिक्षक शिक्षण कार्य के दौरान कई अलग–अलग भूमिका को निभाता है। शिक्षक के पास शिक्षण के अतिरिक्त एक प्रेरक, सरलीकरण व प्रेरणा देने का भी कार्य होता है, कभी–कभी उसे विद्यार्थीयों का मित्र भी बनना पड़ता है। शिक्षक विद्यार्थियों को एक ऐसी शक्ति प्रदान करता है जिससे उनका विश्वास मजबूत बना रहे। एक शिक्षक केवल विद्यार्थियों की गलतियों पर दण्ड देने वाला नहीं होना चाहिए बल्कि उसे सदा सम्भालने वाला होना चाहिए साथ ही उसे अपने विद्यार्थियों की गलतियों में सुधार करने वाला भी होना चाहिए।

शिक्षक अपनी गतिविधियों के द्वारा उनके चरित्र का निर्माण करने वाला होता है। साथ ही साथ वह विद्यार्थियों के स्वयं उत्प्रेरण का निर्माण करता है। वह सदा नवीन प्रयोगों और तरीकों द्वारा विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करता है।

शिक्षक की मित्रवत्ता

शिक्षक कक्षा में ही अपने विद्यार्थियों का ध्यान ही नही रखता अपितु यदि वह समझता है कि अपने विद्यार्थियों को उनके सर्वांगीण विकास में उसे उनका मित्र बनना है तो उसे बनना चाहिए। एक शिक्षक की अपने विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण में बहुत अहम भूमिका होती है। जिससे उनका चरित्र सुदृढ़ हो सके। विद्यार्थी अपने शिक्षक से उत्साह और प्रेरणा प्राप्त करता है जिसके द्वारा वह स्वयं तथा दूसरों का भी चरित्र निर्माण कर सकता है।

शिक्षक की चुनौतियाँ

समस्याएँ ही चुनौतियों के उत्पन्न होने के लिए आधारशिला का कार्य करती है। आज शिक्षा के क्षेत्र में आज असंख्य महत्त्वपूर्ण एवं विचारणीय चुनौतिया हैं, जिनके समाधान के लिए प्रयत्न करना प्रत्येक शिक्षक एवं भावी अध्यापक/अध्यापिकाओं का दायित्व बन जाता है जिनमें से कुछ निम्न हैं –

- भाषात्मक स्तर के साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता को बनाएँ रखने के लिए वास्तविक इच्छा शक्ति और आग्रह को प्रोत्साहित करने से सम्बन्धित चुनौतियाँ।
- अभिनत शिक्षण पद्धतियों, शिक्षण प्रतिमान तथा व्यूह रचनाओं एवं सामान्य तथा विशिष्ठ शिक्षण कौशलों के शिक्षा के क्षेत्र में अनुप्रयोग तथा नवाचार एवं क्रियात्मक अनुसंधान आदि से सम्बन्धित चुनौतियाँ।
- शिक्षा पाठ्यक्रम में भारतीय आदर्श, मूल्य परम्परा, संस्कृति एवं संस्कार आदि के स्थान को निर्दिष्ट करते हुए आधुनिक विकेन्द्रीकरण, भूमण्डलीकरण, आर्थिक उदारीकरण तथा स्वसंधानोपार्जन के संदर्भ में सामन्जस्य की चुनौतियाँ।
- शैक्षिक तथा शिक्षण प्रद्योगिकी के प्रचलन एवं युक्त अधिगम, स्व अधिगम, व्यवहार में त्वरित परिवर्तन मूलक शिक्षण अधिगम तकनीकी आदि के व्यवहारिक समन्वयन सम्बन्धी चुनौतियाँ।
- पर्यावरण प्रदूषण, जनसंख्या विस्फोट, राष्ट्रीय अस्मिता, संवैधानिक दायित्व, अधिकार एवं कर्त्तव्य, नेतृत्व सम्बन्धी चुनौतियाँ।
- आधुनिक व्यवहार एवं उपभोक्तावादी प्रवृत्ति के सन्दर्भ में मनोसामाजिक तथा सांस्कृतिक कारकों के प्रभाव का आकलन और शिक्षा के माध्यम से नियन्त्रणात्मक समन्वयन से सम्बन्धित चुनौतियाँ।
- शिक्षा के क्षेत्र में संसाधन सम्बन्धी चुनौतियाँ।
- वस्तुनिष्ठ एवं निष्पक्ष मूल्यांकन तथा दक्षता धारिता एवं निष्पादन कुशलता केन्द्रित मूल्यांकन समावेशन सम्बन्धी चुनौतियाँ।
- सुसंस्कार आधारित, मूल्य केन्द्रित तथा प्रतिबद्धता उन्मुख शिक्षा सम्बन्धी चुनौतियाँ।

चुनौतियों के समाधान

शिक्षा की इन समस्याओं और चुनौतियों का समाधान प्रमुखतया अध्यापक शिक्षा के विस्तार से ही हो सकता है। कुछ समय पहले तक जहाँ शिक्षा का विस्तार क्षेत्र विद्यालय के प्राथमिक या माध्यमिक स्तरीय सामान्य अध्यापकों की तैयारी तक ही सीमित रहा, वहीं आज इसका विषय विस्तार क्षेत्र विस्तृत होता जा रहा है। यह

परम्परागत क्षेत्र है जिसमें आजकल प्रारम्भिक उच्च माध्यमिक तथा महाविद्यालयीय स्तर पर अध्यापक शिक्षा संबंधी प्रावधानों को भी सम्मिलित किया जा चुका है। ऐसा इसलिए हो रहा है क्योंकि शैक्षिक तथा अध्यापक शिक्षा संदर्भित शोध निष्कर्षों के अनुप्रयोग के लिए निरन्तर प्रयत्न किये जा रहे हैं इसलिए इसके परिणाम भी बेहतर आने लगे हैं। फल संरक्षण से लेकर सिलाई–बुनाई, कढ़ाई, हस्त–कला, काष्ट–कला, मंच–कला, कंठ, यंत्र संगीत तथा ललित–कला आदि अनेक विषय क्रमशः सम्मिलित किये गये हैं। साथ ही प्रतिभावान, सृजनशील, समस्यात्मक, बाल अपराधिक, अधिगम बाधित समस्या युक्त विशिष्ट वर्ग के अधिगम कर्त्ताओं के लिए सम्बन्धित कुशलताओं की प्राप्त भी विशिष्ट शिक्षा कार्यक्रम के माध्यम से ही कर पाना सम्भव हो सकता है।

वर्तमान समय मे शिक्षक की भूमिका

शिक्षक की भूमिका सर्वप्रथम एक मनोवैज्ञानिक के रूप में है। शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह कक्षा में उपस्थित विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, प्रेरणाओं एवं मनोवृत्तियों की जानकारी रखें। शिक्षक विद्यार्थियों को समझने में जिस सीमा तक सफल होते है उसी सीमा तक उनका अध्यापन प्रभावी होता है तथा विद्यार्थी उनकी शिक्षा से लाभान्वित हो पाते हैं। अतः एक सफल शिक्षक ऐसे विद्यार्थी की सहायता करता है और उसकी समायोजन समस्या के समाधान का प्रयास करता है। इसी तरह पढ़ाई छोड़ना, अनुपस्थित होना आदि के कारणों को जानने तथा इनके निराकरण के लिए सफल शिक्षक प्रयास करता है। शिक्षक तथा शिक्षार्थियों के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध, सहयोग, एकता का भाव आदि विशेषताएँ देखी जाती है। वह विद्यार्थियों को पूरी स्वतंत्रता दे देता है और उनके व्यवहारों में किसी तरह की बाधा अपनी ओर से नहीं डालता है। कक्षा में शिक्षक एक विशेषज्ञ की भूमिका में होता है अतः शिक्षक को अपने अध्यापन विषय की पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए ताकि विद्यार्थियों को अध्यापन के द्वारा अधिक से अधिक लाभ मिल सके। शिक्षक को शिक्षा के उद्देश्य से अवगत होना चाहिए कि शिक्षा वर्तमान समय में विद्यार्थी केन्द्रित हो चली है और इसका उद्देश्य है विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास। अतः शिक्षक को इसी उद्देश्य को ध्यान मे रख कर शिक्षा देनी चाहिए। ताकि विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास अर्थात् मानसिक, शारीरिक, हस्तकौशल तथा हृदय विकास समुचित रूप से हो सके।

संदर्भ

1. सामान्य अध्ययन – 2012, अन्तर वैयक्तिक कौशल सह–सम्प्रेषण कौशल, प्रकाशक टाटा मैक्ग्रामो हिल एज्यूकेशन प्राईवेट लिमिटेड, 7 वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली 110008 – पृष्ठ 19।
2. hindi.webdunia.com/teachers_day_2007/शिक्षक–मूर्ति–नहीं–मूर्तिकार–है–107090400045_1.htm
3. अध्यापक –पात्रता परीक्षा (अधिगम एवं शिक्षा शास्त्र) उपकार प्रकाशन 2/11 ए, स्वदेशी बीमा नगर, शाह सामने, आगरा पृष्ठ 11।
4. अध्यापक –पात्रता परीक्षा (अधिगम एवं शिक्षा शास्त्र) उपकार प्रकाशन 2/11 ए, स्वदेशी बीमा नगर, शाह सामने, आगरा पृष्ठ 11।